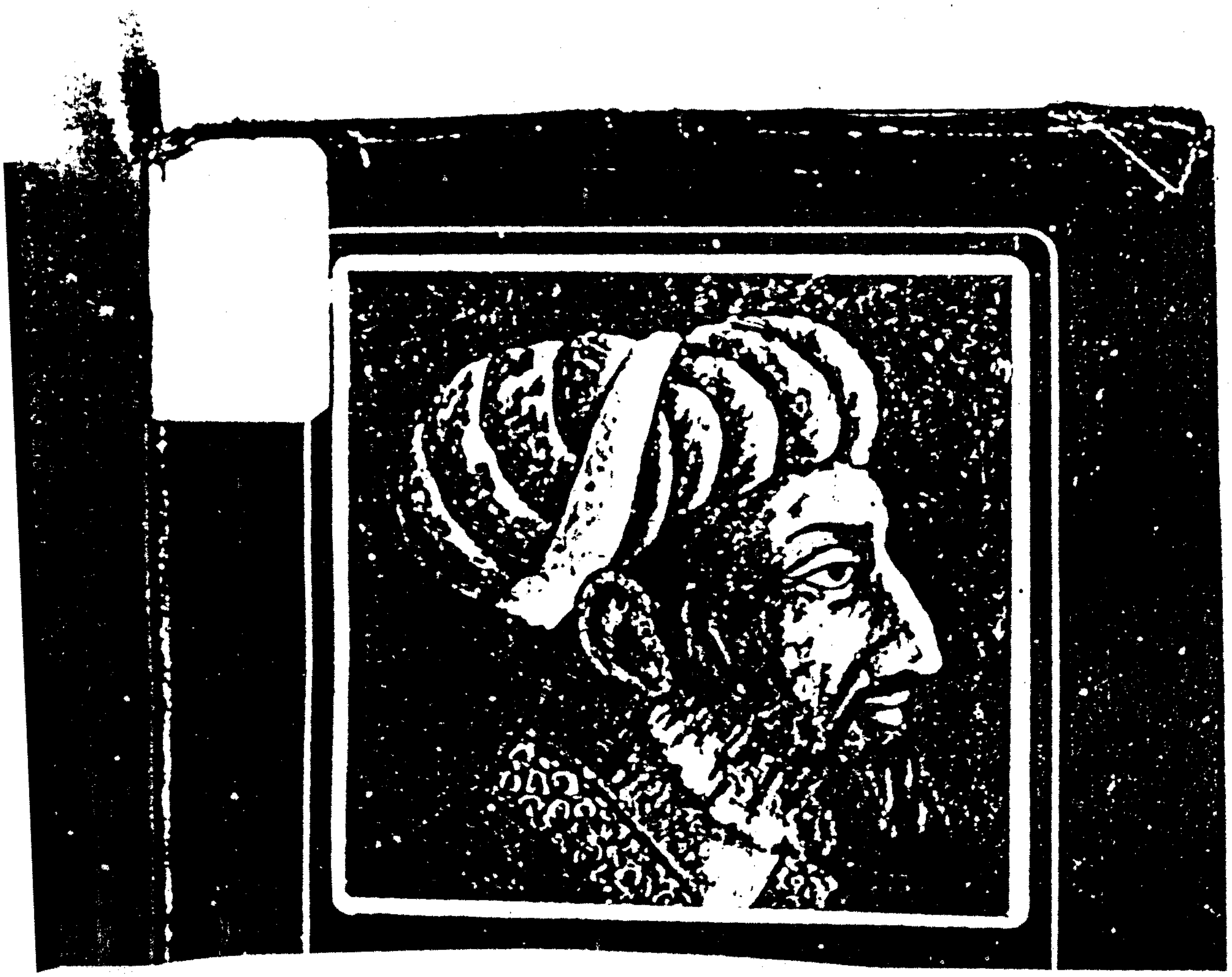

= अब्दुर्रहीम खानखाना

'रहीम'

प्रथम अध्याय

रहीम का व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रथम अध्याय :

रहीम का व्यक्तित्व और कृतित्व

हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल नवजागरण का काल है। यह काल मानव मन के भीतर सोये हुए बडे विराग अनुराग के जागरण का काल है। इस काल में हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष बढता जा रहा था, परंतु कबीर, तुलसी, सूर, जायसी जैसे कवि भक्तिसाधना में मग्न थे। इसी मध्ययुग में जिसका नाम हम बडे आदर के साथ ले सकते हैं ऐसा एक गुणसंपन्न व्यक्ति हो गया, जिसका नाम है - रहीम। रहीम का जीवन - वृत्त एक सुप्रसिध्द ऐतिहासिक महापुरुष के रूप में अकबर और जहाँगीर के काल में लिखे ग्रंथों में मिलता है। अब्दुल बाकी ने "मआसिरे रहीमी" नाम से रहीम की विस्तृत रूप में फारसी में जीवनी लिखी है। इससे रहीम की लौकिक एवं साहित्यिक जीवनी पर काफी प्रकाश पडता है।

रहीम ने अपना सारा जीवन कठिनाइयों से लडते - लडते बिताया। वे स्वभाव से भोले और उदार हृदयवाले थे। धोखेबाज व्यक्तियों पर भी वे विश्वास करते थे और विश्वासघात हो जाता, तब वे कष्टी होते थे। रहीम ने अपने जीवन में मृत्यु और विनाश के भीषण तांडव को देखा, परंतु अपना धैर्य उन्होंने कभी खोया नहीं। वे हमेशा दु:ख के वक्त कहते रहे -

रहिमन विपदा हू भली, जो थोडे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि पडत सब कोय ।।
रहिमन चुपह्वै बैठिये, देखि दिनन के फेर।
जब नीके दिन आइ हैं, बनत न लागि है देर ।।

रहीम ने जीवन की पाठशाला में जो पढा उसे दोहे के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके दोहे दृष्टांत और उदाहरणों से परिपुष्ट होने के कारण सामान्य लोगों में उनका खूब प्रचार हुआ।

मुसलमान होते हुए भी रहीम ने हिन्दू जीवन और भारतीय संस्कृति के मार्मिक तथ्य का उद्घाटन किया है। रहीम हिन्दू जीवन को भारतीय जीवन का यथार्थ रूप मानते थे। इसके बारे में डॉ. बालकृष्ण " अकिंचन " लिखते हैं कि -

" भारतीय नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक जीवनादर्शों तथा धार्मिक नीति - संदर्भों की जैसी निष्ठापूर्ण लोकोपयोगी अभिव्यक्ति इस मुसलमान के काव्य में हुई है, वैसी संस्कारशुन्य कोटि - कोटि हिन्दुओं में मिलना दुर्लभ है। "[१]

रहीम का पूरा जीवन अनेक घटनाओं से भरा हुआ है। उन्हें सुख से भी दु:ख का अनुभव अधिक मिला। जीवन में मिले कटु अनुभवों का उन्होंने धैर्य के साथ सामना किया। वे अपने जीवन के अंतिम दिन तक युध्द और संघर्ष के कोलाहल पूर्ण वातावरण से मुक्ति नहीं पा सके थे।

रहीम के पिता पराक्रमी थे। मुगल सम्राट हुमायूँ पर रहीम के पिता के पराक्रम का गहरा प्रभाव पडा। बादशाह अकबर की शिक्षा का भार उनपर सौंपा गया था। पिता के पराक्रम का गुण रहीम को भी प्राप्त हुआ। उन्होंने पत्नी, तीन बेटे, दामाद की मृत्यु अपनी आँखों से देखी। रहीम ने अपार धन दान में लूट दिया। द्वार पर आये हुए याचक को वे मुँह - मांगा दान देते थे। ऐसे दानवीर रहीम को अंतिम समय में अपनी जीवन - यात्रा के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पडा। ऐसे रहीम का पूरा जीवन - चरित जानना मार्गदर्शक होगा।

रहीम का व्यक्तित्व :

अब्दुर्रहीम खानखाना हिन्दी साहित्य जगत् में रहीम के नाम से परिचित है। उन्होंने कविता में खुद के लिये "रहीम" या "रहिमन" शब्द का प्रयोग किया है। उनके पिता द्वारा दिये गये "अब्दुल रहीम" का रहीम यह लघुरूप है। फारसी

भाषा में अब्दुल रहीम कहने की अपेक्षा अब्दुर्रहीम कहना शुध्द है। रहीम के पिता को खानखाना उपाधि मिली थी, जिसका अर्थ है राजाओं का राजा या राजाधिराज। इसी कारण वे अब्दुर्रहीम खानखाना के नाम से प्रसिध्द हैं। परंतु उनका रहीम नाम ही प्रचलीत है।

रहीम का पूरा व्यक्तित्त्व आकर्षक था। बादशाह अकबर ही नहीं तो दरबारी लोग भी रहीम के आकर्षक व्यक्तित्त्व पर मुग्ध थे। इसी कारण अनेक युवतियाँ रहीम के सौंदर्य पर मोहित होती थीं। इतना ही नहीं तो रहीम की मुख - शोभा का वर्णन सुप्रसिध्द कवि गंग ने भी किया है।

रहीम के माता - पिता :

अब्दुर्रहीम तुर्कमान जाति के कराकयलू (काली बकरीवाले) परिवार की बहारलू शाखा में उत्पन्न बैरमखाँ खानखाना के पुत्र थे। इनकी वंशपरंपरा इस प्रकार है - "बहारलू अलीशकर पीर अली यार बेग सैफ अली बैरमखाँ अब्दुर्रहीम।"[२] हुमायूँ बादशाह के विश्वासपात्र थे। बैरमखाँ शूर थे। इन्होंने अपने पराक्रम से मुगल साम्राज्य का विस्तार किया।

हुमायूँ बादशाह के पश्चात् अकबर बादशाह के अतालीक (राजकुमार का शिक्षक) बैरमखाँ थे। बैरमखाँ योध्दा के साथ - साथ दूरदर्शी मंत्री भी थे। मुगल साम्राज्य दृढ बनाने में उनका श्रेय अधिक था।

ऐसे शूर बैरमखाँ रहीम के पिता थे। बैरमखाँ की अनेक बेगमें थी, परंतु पुत्र नहीं था। तब उन्होंने हरियाणा प्रांत के जमालखाँ मेवाती की सुंदर कन्या सुल्ताना बेगम से विवाह किया। ये पहले राजपूत थे और बाद में मुस्लिम बने थे। जमालखाँ कीी बडी बेटी का विवाह हुमायूँ से हुआ औरी छोटी सुल्ताना का विवाह बैरमखाँ से हुआ।

सुल्ताना बेगम से जो पुत्र बैरमखाँ को प्राप्त हुआ वे ही रहीम हैं। हिन्दु धर्म के प्रति प्रेम रहीम को अपनी माँ की ओर से मिला था।

जन्म :

बैरमखाँ पानीपत के द्वितीय युध्द में हेमू को पराजित करके सिकन्दर सूर के उपद्रव को दबाने के लिए अकबर के साथ पंजाब की ओर जा रहा था तब बैरमखाँ की पत्नी सुल्ताना बेगम ने १७ दिसम्बर १५५६ ई. को रहीम को जन्म दिया इस समाचार को सुनते ही बैरमखाँ की सेना ने शुभ शकुन समझ लिया। वृध्दावस्था में बैरमखाँ को पुत्र प्राप्ति हो चुकी थी। इस वक्त शाही दावतों के साथ मुक्त हस्त द्रव्य लुटा गया। मुगलों में उत्सव मनाया गया।

शिक्षा :

बैरमखाँ के बढते प्रभाव से कई सामंत जलने लगे थे। सम्राट अकबर भी आशंकित था। बैरमखाँ अपने परिवार को लेकर हज की ओर जा रहे थे। पाटन गाँव में आते ही एक पठान ने उनका वध किया। चार वर्षीय रहीम अनाश्रित हो गया।

सम्राट अकबर ने रहीम को अपने पास लाकर उसकी शिक्षा - दीक्षा का प्रबंध किया। अन्दिजान मौलवी, मुल्ला मुहमद अमीन, रहीम के शिक्षक थे। उनसे रहीम ने अरबी, फारसी, तुर्की भाषाओं की शिक्षा प्राप्त की। साथ ही रहीम ने संस्कृत तथा हिन्दी का ज्ञान प्राप्त किया। ज्योतिष, काव्यशास्त्र पर उनका अधिकार था। रहीम ने जो रचनाएँ लिखी हैं उससे पता चलता है कि उनके काव्य में भाषा - वैविध्य, छन्द - वैविध्य और विषय - वैविध्य है।

विवाह :

मुगल सम्राट बाबर, हुमायूँ और अकबर राजनैतिक दृष्टि से विवाह को अधिक महत्त्व देते थे। क्यों कि विवाह के कारण आपसी संघर्ष, विरोध मिट जाता था। रहीम का विवाह भी राजनैतिक दृष्टिकोण को सामने रखते हुए किया गया था। रहीम का विवाह बैरमखाँ के विरोधी मिर्जा अजीज

की बहन माहबानो से हुआ था। माहबानो से रहीम को तीन पुत्र रत्न और दो पुत्रियाँ प्राप्त हुईं।

पारिवारिक जीवन :

रहीम ने अपने असाधारण गुणों से सम्राट अकबर को प्रभावित किया था; परंतु उन्हें अपने पारिवारिक जीवन में अधिक दु:ख सहना पडा। चार वर्ष की अल्प आयु में वे पिता से वंचित हुए। जवानी में पत्नी की मृत्यु हुई। जवान बेटी विधवा हो गयी। तीन बेटों की मृत्यु भी उनके सामने हुई। अपने प्रिय व्यक्तियों का दु:सह विरह उन्हें सहना पडा।

अधिकार और प्रतिष्ठा की हानि से रहीम जर्जर बनते गए। कभी उन्हें कैदी की यातनाएँ सहनी पडीं, अपमान, दारिद्र्य भोगते हुए संघर्ष में उनका जीवन बीत गया। रहीम बुध्दिमान, प्रतिभासंपन्न, कार्यकुशल, योग्य सेनानायक और असाधारर्ण वीर थे। - " खानखानाँ दरबार के बडे अमीरों में से थे। अकबर के राज्य में इन्होंने बडे - बडे कार्य किए, जिनमें तीन प्रमुख थे - गुजरात की विजय, सुहेल के युध्द में शत्रुओं को केवल बीस हजार सवारों से पराजित करना, सिंध और ठट्ट पर विजय।"[3]

रहीम के जीवन के इस चढाव - उतार का प्रभाव उनकी कविता में दिखाई देता है। उनके सच्चे अनुभव उसमें व्यक्त हुए हैं।

मृत्यु :

अनेक संकटों को झेलते - झेलते रहीम का शरीर थक गया। सारा जीवन दौड - धूप में बीता था। पत्नी, दामाद, पुत्रों की मृत्यु की वेदना सहनी पडी थी। वृध्दावस्था के कारण उनके शरीर की शक्ति कम होने लगी। वे बीमार पड गए थे। रहीम दिल्ली में ही रहना चाहते थे। हुमायूँ के मकबरे के समीप उन्होंने अपनी बीवी का मकबरा बनवाया था। रहीम को दिल्ली बहुत प्रिय थी। वे

दिल्ली में ही मरना चाहते थे। रहीम की मृत्यु १६२७ में हो गयी। मृत्यु के समय उनकी आयु इकहत्तर वर्ष की थी।

रहीम का व्यक्तित्व :

अब्दुर्रहीम के व्यक्तित्व में आकर्षण था। सम्राट अकबर रहीम के भव्य भाल और उन्नत ललाट से प्रभावित था। रहीम के पिता के शत्रु भी उनका यह सौन्दर्य स्नेह से देखते थे। रहीम के इस सौंदर्य का वर्णन अनेक कवियों ने किया है। गंग कवि ने रहीम की मुख – शोभा का वर्णन इस प्रकार किया है –

गंग गौछ मौंछि जमुन , अधरन सरसुति राग ।
प्रगट खानखानन के , कामद बदनु प्रयाग ।।

ऐसे सुन्दर और सरस व्यक्तित्व के लिए काव्यकला – संगीतादि में रुचि स्वाभाविक है। परंतु सम्राट अकबर उन्हें उत्कृष्ट सैनिक तथा सेना – नायक के रूप में देखने के लिए आकुल था। इसके लिए अकबर ने गुजरात – युध्द में सेना के मध्य भाग की कमान देकर रहीम को सम्मानित किया। इसके साथ ही रहीम के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं। रहीम सच्चे दानवीर थे, एक अच्छे सेनापति थे, दीन – दुर्बल लोगों के आश्रयदाता थे , उनमें हिन्दू धर्म के प्रति प्रेम था , वे कोमल हृदय के कवि थे और राजनीतिज्ञ भी थे। रहीम ने अपने जीवन में वैभव के दिन भी देखे और अंत में उन्हें दारिद्रय भी सहना पडा फिर भी रहीम हँसते – हँसते सब अनुभवों को सहते रहे।

दानवीर रहीम :

सम्राट अकबर का काल संपन्नता का था। उसके सरदारों ने विपुल संपत्ति प्राप्त की थी। इस धन का उपयोग सरदार अपने विलास के लिए करते थे (और दान – धर्म के लिए करते थे।) परंतु रहीम को जितना भी धन मिला उसे गरीबों में बाँट दिया करते थे। दान देते वक्त रहीम मुँह मांगा दान देने में माहीर थे।

लोग उन्हें कल्पतरु समझते थे। रहीम दान देने जब बैठ जाते तब मुठ्ठी भर-भरके दिया करते थे। उनके सामने द्रव्य की ढेरी लग जाती थी। दान माँगने जो व्यक्ति आया है उसकी ओर वे आँख उठाकर भी नहीं देखते थे। ऐसे निस्पृह दानी के लिए आ. पं. रामचंद्र शुक्ल ने कहा है — " इनकी दानशीलता हृदय की सच्ची प्रेरणा के रूप में थी। कीर्ति की कामना से उसका कोई संपर्क न था।"[४]

रहीम के इस उदारशील स्वभाव के कारण कोश खाली हो जाता। तब वे ऋण लेकर लोगों को दान देने की व्यवस्था करते। रहीम द्रव्य का दान जैसे देते थे वैसे ही भोजन दान दिया करते थे। जब वे भोजन करने के लिए बैठते थे, तब पद और मर्यादा के अनुसार एक साथ सैकडों को भोजन मिलता था। याचकों, गुणियों, साधुओं और सैनिकों को भी बराबर दान मिलता था। रहीम सामान्य से सामान्य आदमी की कठिनाई जानकर उसे भरपूर धन दिया करते थे। एकाद कुलीन व्यक्ति शर्म के कारण रहीम के पास द्रव्य माँगने से डरती थी, तब वे उसकी बात समझकर दान दिया करते थे। ऐसा रहीम का स्वभाव बहुत दानी था। जितना कमाया दूसरों पर लुटा दिया।

आश्रयदाता रहीम :

रहीम के पास जो भी आश्रय के लिये आता, उसे वे उदार हृदय से आश्रय देते और लाखों अशर्फियाँ उसपर लुटा देते। जो भी कवि दरबार में आता वह रहीम का आश्रय पा जाता। कवि एकाध दोहा लिखते और रहीम उन्हें एक लाख रुपये देते थे। उनके दरबार में फारसी से अधिक हिन्दी को आश्रय प्राप्त था। गंग कवि को रहीम ने छत्तीस लाख रुपये दिये थे।

रहीम कवियों का जीवन भर का बीमा कर दिया करते थे। वे कवियों को इतना दे डालते थे कि कवियों को जीवन भर किसी के दरबार में जाने की आवश्यकता नहीं रहती थी। रहीम कवियों को सम्मान के साथ पुरस्कृत करते थे।

और उनकी प्रशंसा में खुद कविता लिखते थे। एक बार एक ब्राह्मण को अपनी कन्या की शादी के लिए धन चाहिए था। वह तुलसीदास के पास चला गया तब तुलसीदास ने एक दोहा लिखकर रहीम के पास उसे भेज दिया। रहीम ने उस ब्राह्मण को धन भी दिया और साथ ही दोहे का उत्तर भी दिया। इस प्रकार साहित्य को इतना महत्व और आश्रय देनेवाला दूसरा व्यक्ति अभी तक उत्पन्न नहीं हुआ।

कुशल सेनापति :

रहीम एक कुशल सेनापति थे। वे तीर और तलवार चलानें में अदभुत क्षमता रखते थे। अगर युध्द संबंधी कोई बात हो तो अत्यंत सूझ – बूझ से काम लेते थे। वे युध्द के समय सैनिकों में उत्साह बढाने के लिए अफवाहें फैला देते थे। जब कभी प्रतिकूल समय आता तो वे युध्द टालने की कोशिश करते थे। अपने सेना – नायकत्व और रण – कौशल के बल पर ही रहीम ने अनेक बार अपने से शक्तिशाली शत्रु को पराजित किया था।

सैनिक हो या सेनापति उसका सबसे बडा भूषण है वीरता। अत: रहीम की वीरता की राजा – प्रजा, शत्रु – मित्र, इतिहासकार और कवि प्रशंसा करते हैं। रहीम केवल वीर, साहसी, और दूरदर्शी ही नहीं, नीति कुशल भी थे। शत्रु – मित्र को वे खूब पहचानते थे। युध्द के अनुकूल व्यूह रचना, युध्द स्थल का चुनाव, खाद्य – पूर्ति का पूर्ण प्रबंध, पराजित शत्रु के भागने का पूर्वानुमान करना आदि बातें रहीम के सेनापतित्व की विशेषताएँ थीं। शत्रु और मित्र सभी उनके सेनानायकत्व का लोहा मानते थे। उनकी रणकुशलता से जहाँगीर भी प्रसन्न था।

सहृदय कवि :

रहीम जैसे पराक्रमी योध्दा थे वैसे सहृदय कवि भी थे। काव्य एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से मनुष्य का यश देशकाल को लांघकर अनेक हृदयों पर

शासन करता है। यही स्थिति रहीम की थी। रहीम का नाम उनके काव्य के कारण ही सभी को मालूम है। उन्हें हिन्दी, संस्कृत, फारसी, अरबी, तुर्की भाषाओं का ज्ञान था।

रहीम के काल में दरबार की भाषा फारसी थी। लेकिन रहीम ने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया। इतना ही नहीं उन्होंने उस काल में भी हिन्दी भाषा का महत्त्व समझ लिया था। काव्यसंदेश को सामान्य जनमानस में उतारनेवाली यदि कोई सर्वाधिक उपयोगी भाषा है तो हिन्दी ही है, इस बात को रहीम ने जान लिया था। इसलिए उन्होंने अपना अधिकतर काव्य हिन्दी में लिखा। साथ ही उन्हें तुर्की भाषा, विदेशी भाषा अवगत थी। विभिन्न स्वदेशी और विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने में रहीम की प्रतिभा अद्वितीय थी। वे अपने युग के सबसे अधिक भाषाएँ जानने वाले और अधिकांश भाषाओं में काव्यरचना की क्षमता रखरेवाले विद्वान थे।

हिन्दुत्व प्रेमी :

रहीम जन्म से मुसलमान थे और अंत तक मुसलमान ही रहे। लेकिन उनके मन में हिन्दु धर्म के बारे में प्रेम था। कारण उनकी माँ मुस्लीम बनने से पहले राजपूत हिन्दू थी। उस काल में सम्राट अकबर के उदारमतवादी वातावरण का प्रभाव रहीम के व्यक्तित्त्व पर पड चुका। वे इस्लाम - हित के लिए कार्य करते रहे। फिर भी उनके मन में हिन्दुत्व के प्रति आस्था थी। उनके श्लोकों को पढकर ऐसा लगता है कि वे हाथ जोडकर भगवान राम तथा कृष्ण की मूर्ति के सामने प्रार्थना कर रहे हों।

रहीम को भगवान कृष्ण के नेत्र, भाल और कर - कपोलों ने आकर्षित किया था। रहीम की दृष्टि में सुख, उच्च पद बडों की जान - पहचान से नहीं, अपितु प्रभु की कृपा से मिलता है। रहीम ने अपने अनुभव, अपनी अनुभूति को हिन्दुओं की शैली में, हिन्दुओं के ग्रंथों के उदाहरण देते हुए कहा है।

जो पुरुषारथ ते कहूं , संपति मिलत रहीम।
पेट लागि बैराट घर , तपत रसोई भीम ।।[5]

रहीम ने महाभारत , रामायण तथा पुराणों से संबंधित अनेकानेक संदर्भ प्रस्तुत किए हैं। -

" रहीम के काव्य को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि रहीम की हिन्दू परंपराओं , रीतिरिवाजों और धर्म - ग्रंथों के प्रति गहरी आस्था थी।"[6]

उनके काव्य में जितनी दिव्यता और निष्ठा प्राप्त होती है उतनी हिन्दुओं के काव्य में नहीं। इसलिए ये मुसलमान कवि सब के लिए आदरणीय है।

इसके अतिरिक्त रहीम के व्यक्तित्त्व की और भी विशेषताएँ हैं। रहीम अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक थे। इस पद के लिए जो गुण आवश्यक थे वे रहीम में थे। उनके व्यक्तित्त्व में विरोधी गुणों का भी सामंजस्य था। वे जितने गंभीर थे उतने ही हँसमुख और विनोदप्रिय थे। व्यवहार - कुशलता उनके व्यक्तित्त्व का सब से बडा गुण था।

रहीम में जैसे अनेक गुण थे साथ ही अनेक कमियां भी थीं। रहीम श्रेष्ठ कवि, दानवीर, पराक्रमी के रूप में सामने आते हैं। उनके इन गुणों के कारण ही उनका व्यक्तित्त्व उज्वल बना है।

रहीम का कृतित्व :

रहीम की अनेक रचनाएँ समय - समय पर प्रकाशित होती रही हैं। रहीम के नाम पर "रहीम सतसई" और "रासपंचाध्यायी" ग्रंथ मिलते हैं। रहीम की जो भी पुस्तकें प्राप्त होती हैं उन्हें रहीम रत्नावली में संकलित किया है। वे इस प्रकार हैं -

१) दोहावली	२) नगर शोभा
३) बरवै नायिकाभेद	४) बरवै
५) मदानाष्टक	६) फुटकर छंद तथा पद
७) श्रृंगार सोरण	८) संस्कृत - काव्य आदि।

दोहावली :

रहीम के काव्य ने सोने में सुगंध भरने का कार्य किया है। अपने जीवन में जो कटु अनुभव मिले उन्हें सरस अभिव्यक्ति में व्यक्त किया है। जीवन में सुसमय के बाद कुसमय भी आता है। ऐसे वक्त व्यक्ति को डरना नहीं चाहिए। जैसे -

दुर दिन परे रहीम कहि , दुरथल जैयत भागि।
ठाडे हू जत घूर पर , जब घर लागत आगि।[७]

रहीम में जन्मजात काव्य प्रतिभा थी। उन्होंने अपने काव्य में सम्मान और सत्‌शील होने का वर्णन किया है। शील आदमी के लिए सबकुछ है। इसलिए मन पर संयम होना आवश्यक है।

नगर शोभा :

" नगर शोभा " रहीम का श्रृंगारिक ग्रंथ है। इस ग्रंथ में नारी - सौन्दर्य के साथ भवन उद्यानादि , नगर के पार्थिव उपकरणों का चित्रण किया गया है। विभिन्न उद्योग - धंधों में संलग्न रमणियों का चित्रण है। सर्वप्रथम दो दोहों में मंगलाचरण है। मंगलाचरण के पश्चात् रहीम ने ब्राह्मणी से लेकर भंगिनी तक के सौन्दर्य का वर्णन बडी ही शिष्टता, तल्लीनता और काव्यात्मकता के साथ किया है। इस ग्रंथ की सब से बडी विशेषता यह है कि, जाति विशेष के सामाजिक गौरव का ध्यान रखते हुए उसी उद्योग में काम आने वाले पदार्थों एवं उपकरणों से जाति विशेष की नायिका का सौन्दर्य चित्रण किया गया है।

नगर शोभा ग्रंथ के अंतर्गत १४२ दोहे हैं। इसमें श्रृंगार के मादक चित्र रहीम ने प्रस्तुत किए हैं , परंतु उसमें अश्लीलता नहीं है।

बरवै नायिका भेद :

रहीम की उपर्युक्त कृति हिन्दी साहित्य में प्रसिध्द है। नाम से ही स्पष्ट होता है कि इस कृति में नायिकाओं के भेद - प्रभेदों का वर्णन है। इस

ग्रंथ की हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हैं। इसे रीति-ग्रंथों की शैली में लिखा है। इसकी भाषा अवधी है। यह ग्रंथ नायिका - भेद संबंधी सबसे पुराना है। इसमें जो छन्द हैं वे सुगठित लालित्यपूर्ण एवं कवित्वपूर्ण है। ग्रंथ में ११६ छन्द हैं।

भावों की दृष्टि से यह रचना अत्यंत सरस बनी है। संयोग, वियोग, मान, पूर्वराग , आवेग तथा आकुलता आदि मनोवेगों की बहुत ही सुन्दर अभिव्यंजना नायिका - भेद के बरवौं में है। -

" साहित्यिक , शास्त्रीय तथा सामाजिक दृष्टियों से यह रचना अत्यंत प्रौढ एवं उपयोगी है।" [8]

बरवै :

इसकी प्रतियाँ मेवात और इलाहाबाद में प्राप्त हुई हैं। यह रचना प्रामाणिक है। इस ग्रंथ में ऋतु - वर्णन, भ्रमर - गीत , ज्ञान , भक्ति , वैराग्य तथा धर्मोपदेश आदि विषयों का वर्णन किया गया है। इसके १०५ छंद प्राप्त हुए हैं। इनका कोई क्रम नहीं है। इस रचना में अधिकतर शांत और श्रृंगार रस है। साथ ही बारह मासा पध्दति पर लिखे गए आषाढ , सावन , भादो तथा फाल्गुन संबंधी ४ छंद हैं।

श्रृंगार सोरठ :

रहीम की यह रचना प्रसिध्द है। इसके अंतर्गत केवल सात छंद मिलते हैं। इसमें भाव - बोध और भाषिक संरचना की दृष्टि से ये प्रभावी है। इन सोरठों में रहीम की रसिकता स्पष्ट होती है। ग्राम वधुएँ एक दूसरे के घर में चुल्हा सुलगाने के लिए आग माँगने जाती हैं। इस दृश्यपर रहीम ने अपने भाव व्यक्त किए है। दीपक हवा के झोंके से बुझ न जाय इसलिए स्त्रिया दीपक को आँचल से ढँक लेती हैं। इसका भी सुंदर वर्णन रहीम ने इस कृति में किया है।

दीपक हिए छिपाय , नवल वधू घर ले चली।
कर विहीन पछिताय, कुच लखि जिन सीसै धुनै।।

कल्पना की कमनीयता, कवित्व की सरसता , शैली की सुकुमारता तथा भाषा की सालंकार सरलता के कारण ये सोरठे बेजोड हैं।

मदनाष्टक :

रहीम मुसलमान होते हुए भी संस्कृत - प्रेमी थे। इस रचना को उन्होंने संस्कृत शैली का उपयोग करके लिखा है। अष्टछापी नंददासजी ने "रासपंचाध्यायी" काव्य की रचना की है। इसी विषय पर आधारित रहीम ने मदनाष्टक की रचना की है। इस ग्रंथ की तीन प्रतियाँ प्राप्त हैं।

मदनाष्टक के प्रथम पद में कृष्ण के वेणु - वादन से मंत्र - मुग्ध गोपिका का वर्णन है। दूसरे पद में प्रणय - विभोर गोपिका का वर्णन है। तीसरे पद में और चौथे पद में कथानक एक अलग मोड लेता है। इस ग्रंथ का पाँचवा पद स्मृति विव्हलता का पद है।

फुटकर पद :

इस रचना के अंतर्गत रहीम के चार कवित्तों, पांच सवैयों , दो दोहों तथा दो पदों का समावेश किया हैं। प्राप्त फुटकर पद भक्ति एवं नीति विषयक तो हैं ही , श्रृंगार विषयक भी हैं। अधिकतर पद श्रृंगार के ही हैं। इस रचना में नैन बाणों से बिंधे हृदय की अवस्था का चित्रण किया गया है। साथ ही कृष्ण का सौन्दर्यबोध वर्णित किया है। सवैयों की भाषा ब्रज है और कवित्तों की खडीबोली मिश्रित ब्रजभाषा है। छन्द शास्त्र की दृष्टि से ये छंद उच्चकोटि के हैं।

संस्कृत काव्य :

इस रचना के अंतर्गत संस्कृत श्लोकों का संग्रह है। इसमें निर्वेदमूलक भावनाएँ व्यक्त हुई हैं। उस काल में संस्कृत के अनेक ग्रंथ लिख गए थे। उनका प्रभाव रहीम की रचनाओं पर पडा। हिन्दु - धर्म ग्रंथ संस्कृत में ही थे। रहीम को भारतीय संस्कृति से लगाव होने के कारण उन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत-सा काव्य लिखा है।

निष्कर्ष :

रहीम का व्यक्तित्व सर्वतोमुखी , प्रतिभा संपन्न था। उनके मन में जन्म से मुस्लिम होते हुए भी हिन्दु धर्म के प्रति निष्ठा थी। उनके व्यक्तित्व में विरोधी गुणों का बडा सुंदर सामंजस्य था। रहीम भक्त , कवि , भाषाविद्, ज्योतिष , दानवीर , प्रशासक और सेनापति एक साथ थे।

सरल व्यक्तित्व के साथ ही कूटनितीक दाँव - पेंचों के सिद्धहस्त थे। विविध भाषा - ज्ञान , उदार काव्याश्रय तथा मुक्त हस्त दान में, वे अपने युग की सार्वभौमिक विभूति थे।

रहीम की रचनाओं से ज्ञात होता है कि वे उच्चकोटि के प्रतिभावान व्यक्ति थे। वे विशेषतया श्रृंगार , भक्ति और नीति के कवि थे। इनकी कवि - प्रतिभा प्रबंधकार की प्रतिभा न होकर , मुक्तककार की प्रतिभा थी। रहीम हिदुत्व प्रेमी थे। इसी कारण भारतीय नैतिक मूल्यों , सांस्कृतिक जीवनादर्शों तथा धार्मिक नीति - संदर्भों की जैसी निष्ठापूर्ण लोकोपयोगी अभिव्यक्ति इस मुसलमान के काव्य में हुई है वैसी अन्यत्र नहीं। हिन्दी एवं हिन्दुत्व का समर्थक यह मुसलमान कवि सर्वथा वन्दनीय है।

संदर्भ सूची

(१) रहीम का नीतिकाव्य
डॉ. बालकृष्ण "अकिंचन"
अलंकार प्रकाशन, संस्करण-१९७२,
पृष्ठ सं. १

(२) रहीम ग्रंथावली
संपा- मिश्र विद्यानिवास
समीर प्रकाशन, पृष्ठ सं-१

(३) रहीम ग्रंथावली
संपा-मिश्र विद्यानिवास
समीर प्रकाशन, संस्करण-१९८५
पृष्ठ सं-४२

(४) हिन्दी साहित्य का इतिहास
पं. शुक्ल रामचंद्र
१४ वा संस्करण, पृ. सं. २०८

(५) रहीम के दोहे
प्रकाशक- लोंढे शंकरराव
तीसरा संस्करण, दोहा क्र. ८३,
पृष्ठ सं-८

(६) रहीम का नीतिकाव्य
डॉ. बालकृष्ण "अकिंचन"
संस्करण-१९७२, पृष्ठ सं. ५१

(७) रहीम के दोहे
प्रकाशक-लोंढे शंकरराव
तीसरा संस्करण, दोहा क्र. १७१
पृष्ठ सं-१६

(८) रहीम शतकत्रय
डॉ बालकृष्ण "अकिंचन"
अलंकार प्रकाशन, संस्करण-१९७८,
पृष्ठ सं. ८५